ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 91-95**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली की वर्तमान में प्रासंगिकता

डॉ0 शिव प्रकाश राय

असिस्टेंट प्रोफेसर– राजनीति विज्ञान विभाग, सुमित्रानंदन पंत राजकीय महाविद्यालय, गरूड़–बागेश्वर, (उत्तराखण्ड) भारत

Received-24.09.2025, Revised-03.10.2025, Accepted-10.10.2025 E-mail : spraibhu@gmail.com

सारांशः ***प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से गुरूकुल और विश्वविद्यालयो (जैसे नालंदा, तक्षशिला) पर आधारित थी, जो नैतिक, आध्यात्मिक और व्यवहारिक ज्ञान पर जोर देती थी। जहां शिष्य गुरू के साथ रहकर (आवासीय प्रणाली) सीखते थे। मौखिक शिक्षा, वाद–विवाद और व्यवहारिक अनुभव (कृषि, चिकित्सा) के माध्यम से सर्वांगीण विकास होता था, जिसमें शिक्षा धर्म प्रधान होने के साथ साथ सभी विषयों (व्याकरण, गणित, दर्शन) को शामिल करती थी और महिलाओं को भी शिक्षा का अधिकार प्राप्त था।***

भारत में प्राचीन काल से और विशेष रूप से पुनर्जागरण काल, भारतीय संस्कृति के स्वर्ण युग के दौरान शिक्षा और सीखने की एक समृद्ध परंपरा रही है। इस अवधि के दौरान शिक्षा में प्रमुख तीन उपलब्धियां दशमलव प्रणाली, महान संस्कृत महाकाव्य और खगोल विज्ञान, गणित और धातु विज्ञान में योगदान थीं। चार वेदों, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद को आदर्शों, प्रथाओं और आचरण के माध्यम से संरचित किया गया था। भारतीय शिक्षा प्रणाली में कर्म का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है और यह प्राचीन से आधुनिक शिक्षा में परिवर्तन के दौरान विकसित हुआ है। वैदिक काल में शिक्षण के दो तरीके प्रचलित थे। पहला मौखिक विधि, और दूसरा सोच पर आधारित/वर्तमान उच्च शिक्षा ने इसी तर्ज पर बहु–विषयक दृष्टिकोण के रुझान दिखाए हैं। एनईपी 2020 एक बहु–विषयक दृष्टिकोण का भी सुझाव देती है। ब्लूम का वर्गीकरण सीखने के तीन क्षेत्रों को परिभाषित करता है, संज्ञानात्मक, भावात्मक और मनोप्रेरक। प्राचीन शिक्षा प्रणाली भी निम्न–स्तरीय संज्ञानात्मक कौशल का निर्माण करके उच्च–क्रम सीखने को विकसित करने के लिए तीन क्षेत्रों पर आधारित है। भारत में शिक्षा प्रणाली पर प्रकाशित शोध लेखों पर आधारित अन्वेषणात्मक अध्ययन, बहु–विषयक शिक्षा में प्राचीन शिक्षा प्रणाली की प्रासंगिकता पर मौजूदा शैक्षणिक अनुसंधान की व्याख्या करना चाहता है।जहां स्वामी विवेकानन्द जी के द्वारा वेदों पर आधारित प्राचीन शिक्षण प्रणालियों में कई योग अभ्यास शामिल थे। सामान्य तौर पर, मन को शांत करने और सीखने में सुधार करने के लिए, आसन, मंत्रों का जाप और ध्यान किया जाता था। यू. जी. सी. और ए. आई. सी. टी. ई. द्वारा निर्देशित एच. ई. आई. द्वारा समान प्रथाओं पर जोर दिया जाता है। सार्वभौमिक मानव मूल्य (यूएचवी) को समग्र व्यक्तित्व विकास और योग में एक एकीकृत दृष्टिकोण के अभ्यास के लिए लागू किया गया है। स्मृति विकसित करने के आधुनिक तरीकों में तार्किक विधि, अंतराल अधिगम और तर्कसंगत स्मृति शामिल हैं। ये सभी शिक्षण और सीखने के प्राचीन तरीके से प्राप्त हुए हैं।

कुंजीभूत शब्द– प्राचीन शिक्षा, वैदिक ज्ञान, आधुनिक बहु–विषयक, सार्वभौमिक मानव मूल्य,शिक्षा प्रणाली, अन्वेषणात्मक अध्ययन।

परिचय– वैदिक शिक्षा के सिद्धांत दुनिया की सभी शिक्षा प्रणालियों के लिए प्रेरणा का स्रोत रहे हैं। यही प्राथमिक कारण था कि भारत ने चाणक्य, आर्यभट्ट, पिंगल, सुश्रुत, चरक आदि जैसे महान विद्वान पैदा किए। यह पारंपरिक शिक्षा प्रणाली शिक्षा का एक प्रथागत रूप है जिसमें शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य आने वाली पीढ़ी को ज्ञान देना है। पारंपरिक शिक्षा प्रणाली वह है जिसमें कक्षाओं की चारदीवारों के भीतर जानकारी प्राप्त की जाती है। प्राचीन भारत में शिक्षा बाकी दुनिया से काफी अलग थी। शिष्य या शिक्षार्थी को घर छोड़कर सीखने की पूरी अवधि के लिए गुरुकुल में शिक्षक के साथ रहना पड़ता था। पाठ्यक्रम, शिक्षण और सीखने में हस्तक्षेप समाज या राज्य नहीं कर सकता था। प्राचीन भारत में शिक्षा प्रणाली के औपचारिक और अनौपचारिक दोनों तरीके मौजूद थे। घर में, मंदिरों में, पाठशालाओं और गुरुकुलों में शिक्षा दी जाती थी। पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में, छात्रों को परंपराओं, रीति–रिवाजों, अनुष्ठानों और धर्म के बारे में पढ़ाया जाता था। छात्रों ने प्रथा, धर्म, सच्चाई, अनुशासन, आत्मनिर्भरता और प्रकृति और सृजन के बारे में अधिक सीखा। जैसे–जैसे हम प्रगति करते हैं, हम देखते हैं कि शिक्षा प्रणाली विकसित हुई है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली की शुरुआत के साथ, शिक्षार्थी वर्तमान जानकारी तक पहुँचने और ज्ञान–आधारित समाज की ओर संक्रमण करने में सक्षम हैं। आधुनिक शिक्षा अधिक अंतःविषय और अनुप्रयोग–उन्मुख है। भारतीय शिक्षा प्रणाली प्राचीन शिक्षा प्रणाली से अपने अनुकूलन के कारण अन्य देशों की शिक्षा प्रणालियों के बीच बहुत लोकप्रिय और विविध है।

भारत एक युवा देश है, और भारत का जनसांख्यिकीय लाभांश विकास के पीछे की ताकत है। तकनीकी और वैज्ञानिक सुधारों ने भारत में आर्थिक विकास को बढ़ावा दिया है। भारतीय विश्वविद्यालय सबसे बड़ी शिक्षा प्रणाली है जो प्राचीन शिक्षा की रीढ़ और नींव पर निर्मित होती है जिसके बाद मध्ययुगीन काल में शिक्षा का अनुसरण किया जाता है। इस पेपर का मुख्य उद्देश्य यह बताना है कि हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली में विकास के लिए क्या आवश्यक है, प्राचीन शिक्षा प्रणाली से आधुनिक शिक्षा प्रणाली को मजबूत तरीके से अपनाना। लेकिन, हाल के दिनों में शिक्षा की गुणवत्ता में भारी गिरावट देखी गई है। इसका कारण पश्चिमी संस्कृति के प्रति

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

भारतीयों का अपार मोह है। स्थिति तब और बिगड़ गई जब भारत एक ब्रिटिश उपनिवेश बन गया और लगभग 200 वर्षों तक उस पर शासन किया गया। इस अवधि के दौरान, अंग्रेजों ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को सफलतापूर्वक समाप्त कर दिया और इसे सीखने की एक पाठ्यपुस्तक–आधारित पद्धति के साथ बदल दिया, जिसने प्रकृति और उसके तत्वों के साथ छात्रों की बातचीत को रोक दिया और क्रमशः छात्रों और शिक्षकों के लिए सीखने और शिक्षण के दायरे को सीमित कर दिया। आजकल छात्र अध्ययन करने के लिए अध्ययन करते हैं न कि सीखने और एक बेहतर व्यक्ति बनने के लिए। वास्तव में, यह अवधारणा कि स्कूल और कॉलेज की शिक्षा उनकी मूल्य प्रणाली का निर्माण करने के लिए है, उनके लिए अलग है। हालांकि कहावत यह है कि ''शिक्षा घर से शुरू होती है'' यह सच है, फिर भी हम इस तथ्य को नजर अंदाज नहीं कर सकते कि एक छात्र स्कूल में लगभग 7–8 घंटे बिताता है। उनके लिए, विशेष रूप से उनके प्रारंभिक वर्षों में, स्कूल एक दूसरा घर है और शिक्षक एक माता–पिता हैं। लेकिन, स्कूल और कॉलेज छात्रों को चूहे की दौड़ के लिए तैयार कर रहे हैं जो अंत में छात्रों को न केवल भ्रमित करता है बल्कि मूल्यों और चरित्र से भी वंचित कर देता है। जहाँ भी आप देखते हैं वहाँ अस्वास्थ्यकर प्रतिस्पर्धा है। लोग धोखा देने, रिश्वत देने और शीर्ष पर बने रहने के लिए किसी भी साधन का उपयोग करने को तैयार हैं। मूल्यों की इस कमी के कारण ही हमारी आधुनिक शिक्षा प्रणाली यह प्रदान करने में विफल रही है कि लोग भयानक रूप से भौतिकवादी बन रहे हैं। उनका मानना है कि पैसा कुछ भी खरीद सकता है। और इस प्रकार, अपने लाभ के लिए लोगों और संसाधनों दोनों का दोहन करें।

प्राचीन काल में, जब भारत को स्वर्ण पक्षी कहा जाता था, लोग एक साधारण जीवन शैली जीने में विश्वास करते थे, इसलिए नहीं कि उनके पास धन और संसाधनों की कमी थी, बल्कि इसलिए कि उनकी नैतिकता और मूल्य प्रणाली मजबूत थी।

ऐसे लोग स्वाभाविक रूप से कम भौतिकवादी थे। हमारे बीच इस मानसिकता ने सभी मानव–प्रेरित आपदाओं को इतना बढ़ा दिया है कि हमारी आने वाली पीढ़ियों का जीवन और कल्याण दांव पर है। महामारी बनने से पहले इस स्थिति को समझने और उससे निपटने के लिए, निम्नलिखित अध्ययन किया गया है।

साहित्य संकलन– वैदिक काल के दौरान शिक्षाः 1500 ईसा पूर्व–600 ईसा पूर्वः शिक्षा का अंतिम उद्देश्य चित्त–वृत्ति–निरोध के रूप में उभरा शिक्षा समग्र और सर्वांगीण थी। छात्र को स्थिति या दिव्य सत्य का अनुभव कराने और उसके अनुसार खुद को और समाज को ढालने का प्रयास किया गया। शिक्षक और छात्र हमेशा अपनी समझ में बहुत करीबी संबंध और पारदर्शिता साझा करते थे। शिक्षक को एक आदर्श माना जाता था क्योंकि वह उस समाज द्वारा अनुमोदित था जिसमें छात्र रहता था। दैनिक व्याख्यानों और कक्षाओं और व्यावहारिक कार्यों के माध्यम से, शिक्षकों ने व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया और श्रम की गरिमा का प्रदर्शन किया। प्राचीन शिक्षा और भारतीय संस्कृति का आधार चार वेदों में निहित है।

ऋग्वेदिक शिक्षा मुख्य रूप से पुजारी वर्ग के लिए थी और जनता के लिए धर्मनिरपेक्ष धर्म और व्यावसायिक प्रशिक्षण था। वैदिक काल के दौरान शिक्षण का तरीका व्यावहारिक था और यह मौखिक सोच पर आधारित था। आधुनिक समय में भी, शिक्षक छात्रों को शोध करने, आवेदन करने, मूल्यांकन करने और निर्माण करने के लिए मार्गदर्शन करते हैं, यह प्रक्रिया वैदिक काल के दौरान बहुत मौजूद थी। वैदिक काल की शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से चरित्र निर्माण पर केंद्रित थी, व्यक्तित्व का विकास, और काफी हद तक यजुर्वेद और अथर्ववेद शिक्षण के माध्यम से, जिसने इसे व्यावहारिक बना दिया और इस प्रकार आर्य संस्कृति का विकास हुआ। सुनना, सोचना और ध्यान शिक्षा के तीन प्रमुख तरीके थे। प्रश्न–उत्तर प्रणाली भी बाद की अवधि के दौरान विकसित हुई। शिक्षक को एक प्रमुख स्थान प्राप्त था और वह विद्यार्थियों के लिए सबसे बड़ा मार्गदर्शक था। आचरण और अनुशासन के नियम शिक्षा का एक अविभाज्य पहलू थे, उन दिनों वैदिक शिक्षा की अवधि बारह वर्ष थी और शिक्षा गुरुकुलों, परिषदों (शैक्षणिक संस्थानों) और सम्मेलनों के माध्यम से प्रदान की जाती थी आधुनिक शिक्षा प्रणाली भी उसी संरचना के साथ प्रतिध्वनित होती है।

वैश्यों के लिए, व्यापारी वर्ग, कृषि, पशुपालन और व्यापार उनका मुख्य व्यवसाय था। व्यवसाय को समझने के लिए अंकगणित, भूगोल, अर्थशास्त्र, कृषि विज्ञान और व्यवसाय पद्धति का अध्ययन अत्यंत आवश्यक था। शूद्रों के लिए उच्च शिक्षा का कोई प्रावधान नहीं था। शूद्रों ने मुख्य रूप से नृत्य, मुखर संगीत, आर्केस्ट्रा संगीत और रंगाई की कला सीखी। उनका ज्ञान और कौशल पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित होता रहा है व्यवस्था की सबसे बड़ी कमी जाति व्यवस्था के आधार पर शिक्षा और प्रशिक्षण में प्रतिभाग था।

सूत्रों में शिक्षा– 600 ईसा पूर्व–200 ईसा पूर्वः वैदिक साहित्य की अवधि के बाद सूत्र साहित्य की अवधि आई। वैदिक काल के दौरान शिक्षा और प्रशिक्षण की आवश्यकता ने सूत्र शिक्षा को जन्म दिया, जो शिक्षा की व्यावहारिक पद्धति की ओर अधिक था। इस शिक्षा की एक विशेष विशेषता छात्रों को दी जाने वाली सीखने की विशेषज्ञता शाखाएँ थीं। ज्ञान की कई शाखाएँ, जैसे ज्यामिति, बीजगणित, शरीर विज्ञान, खगोल विज्ञान, ज्योतिष और वेद सीखने के चरम पर पहुँच गईं। पाणिनी, कात्यायन और पतंजलि के कार्यों में इस साहित्य और कार्य का उल्लेख मिलता है। इस अवधि के दौरान एक विशेषता जो स्पष्ट रूप से सामने आई, वह थी दर्शन में प्रगति। सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का एकमात्र उद्देश्य चरित्र निर्माण और व्यक्तित्व विकास था। यह योग (मन और शरीर का एकीकरण) न्याय (न्याय) कर्म (कार्य) और वेदांत के माध्यम से हासिल किया गया था।

महाकाव्यों में शिक्षा– महाकाव्यों में बिखरे हुए तथ्य, जैसे रामायण और महाभारत, हमें उस अवधि के दौरान सैन्य शिक्षा की झलक देते हैं। आधुनिक विश्वविद्यालय संरचना में कुलपति (कुलाधिपति) और उपकुलपति (कुलपति) शब्द महाकाव्यों में उल्लेख से लिया गया है। कुलपति को 10,000 शिष्यों के गुरु (प्रमुख) पर लागू किया गया था। सैन्य विज्ञान को आम तौर पर धनुर्वेद कहा जाता था। इस अवधि के दौरान सैन्य शिक्षा विज्ञान बहुत महत्वपूर्ण था। तक्षशिला, उज्जैन, नालंदा, बनारस और मदुरा जैसे कई संस्थानों की स्थापना की गई थी। 6वीं शताब्दी के प्रसिद्ध चिकित्सा विशेषज्ञ जिसका, 7वीं शताब्दी के प्रसिद्ध व्याकरणविद पाणिनी और 4वीं शताब्दी के

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

अर्थशास्त्र के अधिकारी काटिल्य तक्षशिला के छात्र थे। संक्षेप में, महाकाव्यों में शिक्षा मुख्य रूप से व्यावसायिक प्रशिक्षण थी, जो अनिवार्य रूप से व्यावहारिक और अनुप्रयोग उन्मुख थी।

वैदिक काल– प्राचीन भारत में शिक्षा शिक्षकों द्वारा दी जाती थी, जिन्हें 'गुरु' शब्द से संबोधित किया जाता था। गुरु छात्रों को ज्ञान और जानकारी प्रदान करते थे, जो उनके आसपास इकट्ठा होते थे और परिवार के सदस्यों के रूप में उनके साथ उनके घर में रहने आते थे। ऐसे स्थान को गुरुकुल कहा जाता था। गुरुकुल मुख्य रूप से एक घरेलू विद्यालय या आश्रम था, जहाँ गुरु द्वारा छात्रों के सीखने का विकास किया जाता था, जो छात्रों को व्यक्तिगत निर्देश और ध्यान देते थे। इस अवधि में, शिक्षा को मुख्य रूप से उच्च जातियों का विशेषाधिकार माना जाता था। सीखना शिक्षक और छात्र के बीच एक घनिष्ठ संबंध था, जिसे गुरु–शिष्य परम्परा कहा जाता था। सीखने की प्रक्रिया आम तौर पर एक धार्मिक समारोह के साथ शुरू होती थी, जिसे 'उपनयन' कहा जाता था, यह एक पवित्र धागा समारोह था .शिक्षा आम तौर पर मौखिक रूप से दी जाती थी। इसमें वेदों और धर्मशास्त्रों जैसे ग्रंथों को पूरी तरह या आंशिक रूप से याद करना शामिल था। व्याकरण, तर्क और तत्व मीमांसा जैसे अंतिम विषयों को पढ़ाया और उनका अध्ययन किया जाता था। मैत्रेयी उपनिषद व्यक्तियों को सिखाता है कि सर्वोच्च ज्ञान (ज्ञान) सीखने (विद्या) प्रतिबिंब (चिंतन) और तपस्या का परिणाम है। आत्मनिरीक्षण (आत्मविश्लेषण) के माध्यम से व्यक्ति को चरणों में मन की शुद्धता और आत्मा की संतुष्टि की अच्छाई (सत्व) का अनुभव करना था। इस दौरान, स्व–शिक्षा को उच्चतम ज्ञान प्राप्त करने का उचित तरीका माना जाता था। इसका सबसे अच्छा उदाहरण तैतेरिय उपनिषद में पाया जा सकता है, जहाँ वरुण का पुत्र भृगु अपने पिता के पास जाता है और उन्हें ब्राह्मण के बारे में शिक्षित करने के लिए कहता है। पिता उसे ध्यान के माध्यम से इसका पता लगाने के लिए कहते हैं, इसलिए, ध्यान को स्व–शिक्षा के सबसे अनिवार्य क्षेत्रों में से एक माना जाता है।

वेद– प्राचीन भारतीय शिक्षा में वेदों का महत्व है। चार वेदों का वर्णन इस प्रकार किया गया है:

ऋग्वेदः ऋग्वेद वैदिक संस्कृत भजनों का एक प्राचीन इंडो–आर्यन भारतीय संग्रह है, जिसमें धार्मिक अनुष्ठान और रहस्यमय व्याख्या पर संबंधित टिप्पणियां हैं। यह हिंदू धर्म के चार विहित पवित्र ग्रंथों में से एक है, जिसे वेदों के रूप में जाना जाता है। ऋग्वेद संहिता के रूप में जाना जाने वाला मूल पाठ लगभग 10,600 छंदों में 1,028 सुक्तों का संग्रह है, जिसे दस पुस्तकों में व्यवस्थित किया गया है। ऋग्वेद संहिता की सबसे पुरानी परतों का दावा है कि वे किसी भी इंडो–यूरोपीय भाषा के सबसे पुराने ग्रंथों में से एक हैं, जो शायद कुछ हिट्टाइट ग्रंथों के समान उम्र के हैं। भाषा विज्ञान और भाषाई साक्ष्य से संकेत मिलता है कि ऋग्वेद के सबसे पुराने भागों की रचना भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर–पश्चिमी क्षेत्र में 1500 और 1200 ईसा पूर्व के बीच हुई थी, हालांकि 1700–1100 ईसा पूर्व का एक व्यापक अनुमान भी दिया गया है। ऋग्वेद का प्रारंभिक संहिताकरण प्रारंभिक कुरु साम्राज्य के दौरान हुआ था।

विवाह और प्रार्थना जैसे हिंदू संस्कारों के दौरान इसके कुछ छंदों का पाठ किया जाना जारी है, जिससे यह संभवतः निरंतर उपयोग में दुनिया का सबसे पुराना धार्मिक ग्रंथ बन गया है। संबंधित सामग्री को दो शाखाओं या स्कूलों से संरक्षित किया गया है, जिन्हें शाक्य और बाशकला के नाम से जाना जाता है। स्कूल–विशिष्ट टिप्पणियों को ब्राह्मणों के रूप में जाना जाता है, प.म। ऐतरेय–ब्राह्मण और कौशितकी–ब्राह्मण, आरण्यक, प.म. ऋग्वेद में इंद्र, अग्नि, रुद्र और दो अश्विनी देवताओं, वरुण, मारुति, सावित्रु और सूर्य जैसे आहारों की प्रशंसा की गई है।

यजुर्वेदः यजुर्वेद गद्य मंत्रों का वेद है। एक प्राचीन वैदिक संस्कृत पाठ, यह एक पुजारी द्वारा बताए गए अनुष्ठान भेंट सूत्रों का संकलन है, जबकि एक व्यक्ति यज्ञ अग्नि से पहले जैसे अनुष्ठान कार्य करता था। यजुर्वेद चार वेदों में से एक है, और हिंदू धर्म के ग्रंथों में से एक है। यजुर्वेद की रचना की सटीक शताब्दी अज्ञात है, और विद्वानों द्वारा 1200 से 1000 ईसा पूर्व के आसपास होने का अनुमान है, जो सामवेद और अथर्ववेद के समकालीन है। यजुर्वेद को व्यापक रूप से दो काले (कृष्ण) यजुर्वेद और सफेद (शुक्ल) यजुर्वेद में वर्गीकृत किया गया है। काला शब्द का अर्थ है यजुर्वेद में छंदों का गैर–व्यवस्थित, अस्पष्ट, विविध संग्रह, इसके विपरीत ''सफेद'' जिसका अर्थ है सुव्यवस्थित और स्पष्ट यजुर्वेद। काला यजुर्वेद चार पाठों में जीवित रहा है, जबकि सफेद यजुर्वेद के दो पाठ आधुनिक समय तक जीवित रहे हैं।

यजुर्वेद संहिता की सबसे पुरानी और सबसे प्राचीन परत में लगभग 1,875 छंद शामिल हैं, जो अभी तक अलग–अलग हैं।

सामवेदः सामवेद धुनों और मंत्रों का एक वेद है। यह एक प्राचीन वैदिक संस्कृत ग्रंथ है, और हिंदू धर्म के ग्रंथों का हिस्सा है। चार वेदों में से एक, यह एक धार्मिक ग्रंथ है, जिसमें 1,875 छंद हैं। 75 श्लोकों को छोड़कर सभी ऋग्वेद से लिए गए हैं। सामवेद के तीन पाठ बचे हैं, और वेद की विभिन्न पांडुलिपियाँ भारत के विभिन्न हिस्सों में पाई गई हैं, जबकि इसके शुरुआती हिस्सों को ऋग्वेद काल के रूप में माना जाता है, मौजूदा संकलन वैदिसक संस्कृत, प.म. के उत्तर–ऋग्वेद वैदिक मंत्र काल से है। 1200 या 1000 ईसा पूर्व, लेकिन अथर्व वेद और यजुर्वेद के लगभग समकालीन।

सामवेद के भीतर व्यापक रूप से अध्ययन किया गया चंदोग्य उपनिषद और केन उपनिषद निहित है, जिसे प्राथमिक उपनिषद माना जाता है और हिंदू दर्शन के छह स्कूलों, विशेष रूप से वेदांत स्कूल पर महत्वपूर्ण माना जाता है। शास्त्रीय भारतीय संगीत और नृत्य परंपरा सामवेद के मंत्रों और धुनों को अपनी जड़ों में से एक मानती है।इसे सामवेद भी कहा जाता है। सामवेद में गाने के लिए छंद हैं। ये छंद सात स्वरों का उपयोग करके अपने मूल में बनाए गए हैं। सा, रे, गा, मा, पा, धा, नी, जो भारत में प्रचलित शास्त्रीय संगीत का आधार हैं। ये स्वर मानव शरीर में ऊर्जा केंद्रों (चक्रों) को उत्तेजित करके आत्मा की मुक्ति में सहायता करते हैं।

अथर्ववेदः अथर्ववेद वैदिक संस्कृत में रचित है, और यह लगभग 6,000 मंत्रों के साथ 730 सुक्तों का संग्रह है, जिसे 20 पुस्तकों में विभाजित किया गया है। अथर्ववेद पाठ का लगभग छठा भाग ऋग्वेद के छंदों को अपनाता है, और पुस्तक 15 और 16 को छोड़कर, पाठ कविता के रूप में है जो वैदिक मामलों की विविधता को दर्शाता है। ऐसा माना जाता था कि पैप्पालाडा संस्करण की सुसंगत पांडुलिपियाँ खो गई थीं, लेकिन 1957 में ओडिशा में ताड़ के पत्ते की पांडुलिपियों के संग्रह के बीच एक अच्छी तरह से संरक्षित संस्करण का खुलासा हुआ था। अन्य तीन वेदों के पदानुक्रमित धर्म के विपरीत, अथर्व वेद को एक लोकप्रिय धर्म का प्रतिनिधित्व करने के लिए कहा जाता है, जो न केवल जादू के लिए सूत्रों को एकीकृत करता है, बल्कि सीखने में दीक्षा के लिए दैनिक अनुष्ठान भी करता है प.म। उपनयन, विवाह और अंतिम संस्कार। अथर्ववेद में शाही अनुष्ठान और दरबार के पुजारियों के कर्तव्य भी शामिल हैं।

अथर्ववेद को संभवतः सामवेद और यजुर्वेद के साथ समकालीन रूप से या लगभग 1200 ईसा पूर्व–1000 ईसा पूर्व में एक वेद के रूप में संकलित किया गया था। पाठ की संहिता परत के साथ, अथर्ववेद में एक ब्राह्मण पाठ और पाठ की एक अंतिम परत शामिल है

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

जिसमें दार्शनिक अटकलें शामिल हैं। अथर्ववेद पाठ की बाद की परत में तीन प्राथमिक उपनिषद शामिल हैं, जो हिंदू दर्शन के विभिन्न स्कूलों के लिए महत्वपूर्ण हैं। इनमें मुंडक उपनिषद, मंडूक्य उपनिषद और प्रशन उपनिषद शामिल हैं। अथर्ववेद में सांसारिक सुख प्राप्त करने के लिए सार्थक अनुष्ठान हैं। इसमें रोगों का वर्णन, उन्हें कैसे ठीक किया जाए, पापों और उनके प्रभावों को कैसे हटाया जाए और धन प्राप्त करने के साधन शामिल हैं। अथव वेद आधुनिक समाज के लिए अधिक लागू होता है, क्योंकि यह विज्ञान, चिकित्सा, गणित, इंजीनियरिंग, प्रौद्योगिकी आदि जैसे विभिन्न विषयों से संबंधित है।

मौर्य काल– मौर्य और मौर्य काल के बाद, भारतीय समाज कठोर परिवर्तन के दौर से गुजरा। शहरी केंद्रों और व्यापार के विकास के साथ, व्यापारिक समुदाय ने एक महत्वपूर्ण स्थान हासिल किया। व्यापारियों के संघों ने शिक्षा का प्रावधान करने में अनिवार्य योगदान देना शुरू कर दिया। वे तकनीकी शिक्षा के केंद्र बन गए। उन्होंने जो शिक्षा प्रदान की वह धातु विज्ञान, खनन, बढ़ईगीरी, बुनाई और रंगाई के क्षेत्रों में थी। निर्माण और वास्तुकला में नई रणनीतियों और विधियों का आगमन हुआ। शहरी जीवन के उदय के साथ, नए वास्तुशिल्प रूपों का विकास हुआ। गिल्ड ने खगोल विज्ञान को भी संरक्षण दिया, प.म., सितारों की स्थिति का अध्ययन, उन्हें महासागर नेविगेशन में मदद करने के लिए। खगोलविदों और ब्रह्मांडविदों ने समय पर बहस शुरू कर दी। इसने अतीत की तुलना में समय की एक तेज भावना के विकास में योगदान दिया। चिकित्सा ज्ञान को आयुर्वेद के रूप में व्यवस्थित किया जाने लगा। ये घटक भारतीय चिकित्सा प्रणाली का आधार बने। स्वस्थ शरीर के लिए तीनों घटकों का सही संयोजन आवश्यक था। जड़ी–बूटियों के औषधीय गुणों और उनके उपयोग का ज्ञान एक उन्नत चरण में पहुंच गया। चरक चिकित्सा और सुश्रुत सर्जरी के लिए प्रसिद्ध हो गए। चरक द्वारा लिखित 'चरक संहिता' दवाओं पर एक सटीक और व्यापक कार्य था।

गुप्त काल– गुप्त काल में, जैन और बौद्ध शिक्षा प्रणालियों ने एक अलग आयाम ग्रहण किया। छात्रों को दस साल तक बौद्ध मठों में भर्ती कराया गया था। शिक्षा मौखिक रूप से दी जाती थी और बाद में शिक्षा प्राप्त करने के लिए साहित्यिक ग्रंथों को व्यवहार में लाया गया। मठों में पुस्तकालय थे, जहाँ महत्वपूर्ण ग्रंथ पाए जा सकते थे। चीन और दक्षिण–पूर्व एशिया जैसे अन्य देशों के छात्र शिक्षा के लिए बौद्ध मठों में आते थे। मठों का रखरखाव आम तौर पर राजाओं और अमीर व्यापारिक वर्ग से प्राप्त अनुदान द्वारा किया जाता था। विद्वान दूर और आस–पास के स्थानों से आते थे। फाह्यान, एक चीनी बौद्ध भिक्षु, भी पाटलिपुत्र के मठ में कई साल बौद्ध धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन करते हुए भी बिताए। पाटलिपुत्र के अलावा वाराणसी, मथुरा, उज्जैन और नासिक जैसे अन्य शिक्षण केंद्र भी थे।

छायाचित्रः प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय

नालंदा विश्वविद्यालय को पूरे एशिया में छात्रवृत्ति के उच्च मानकों के लिए जाना जाता था। पढ़ाए जाने वाले विषयों में वेदांत, दर्शन, पुराणों का अध्ययन, महाकाव्य, व्याकरण, तर्क, खगोल विज्ञान, दर्शन, चिकित्सा आदि शामिल थे। अदालती भाषा संस्कृत शिक्षा का माध्यम थी। जैनों ने प्रारंभिक चरण में शैक्षिक उद्देश्यों के लिए 'आदिपुराण' और 'यशतिलक' जैसे संस्कृत साहित्य का उपयोग किया। व्यक्तियों को शिक्षा की मान्यता प्राप्त करने में सक्षम बनाने के लिए, माध्यम को प्राकृत और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं जैसे तमिल, कन्नड़ आदि में बदल दिया गया था। जैन और बौद्ध पुस्तकालयों में पुस्तकें ताड़ के पत्तों पर लिखी जाती थीं जो एक साथ बंधी होती थीं और जिन्हें ग्रंथ के रूप में जाना जाता था। धीरे–धीरे, जैन धर्म और बौद्ध धर्म ने शाही संरक्षण खो दिया और उनके मठ शिक्षा और शिक्षा के केंद्रों के रूप में कम होने लगे। ब्राह्मणों द्वारा समर्थित 'मठ' जैन और बौद्ध मठों के समकक्ष संस्थान थे। शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए 'मठों' में कार्यान्वित कार्य और कार्य आश्रमों के समान थे।

गुप्त काल के बाद– हर्ष के शासनकाल के दौरान, कला और शिक्षा को प्रमुखता मिली। उन्होंने सभी स्तरों पर शिक्षा को प्रोत्साहित किया। मंदिरों और मठों में शिक्षा प्रदान की जाती थी। उच्च शिक्षा के अधिग्रहण के लिए, तक्षशिला, उज्जैन, गया और नालंदा के विश्वविद्यालयों को प्रमुखता मिली। नालंदा में, ह्यूएन त्सांग ने बौद्ध धर्मग्रंथों का अध्ययन करने में कई साल बिताए। प्रमुख शिलभद्र थे, जो एक प्रसिद्ध विद्वान थे। सातवीं और आठवीं शताब्दी में मंदिरों से जुड़े महाविद्यालय शिक्षा के नए केंद्रों के रूप में उभरे। उन्होंने ब्राह्मण शिक्षा प्रदान की और शिक्षा का माध्यम संस्कृत था। इन मंदिर महाविद्यालयों में प्रवेश केवल उच्च जातियों के लिए खुला था। शिक्षा के माध्यम के रूप में संस्कृत का उपयोग आम लोगों को शिक्षा प्राप्त करने से दूर करता है। इस अवधि में, शिक्षा केवल समाज के सबसे उच्च वर्गों का विशेषाधिकार बन गई .

भारत की वर्तमान जनसंख्या 1.3 बिलियन से अधिक है और 2030 तक 1.5 बिलियन और 2050 तक 1.6 बिलियन से अधिक होने का अनुमान है। अब यह अनुमान लगाया गया है कि भारत जल्द ही एक दशक से भी कम समय में जनसंख्या के मामले में चीन को पीछे छोड़ देगा। यह निकट भविष्य के लिए बड़ी चुनौतियां पेश करता है। ऐसी स्थिति में बचत की कृपा शिक्षा है। हमें लोगों के जीवन और भविष्य में ग्रह पर अपने दिन–प्रतिदिन के कार्यों के प्रभावों को समझने की आवश्यकता है। शिक्षा सतत विकास के लिए एक संभावित सहायक है। नीति निर्माताओं के साथ–साथ शैक्षणिक संस्थानों को भी बहुत प्रयास करने की आवश्यकता है। संस्थानों द्वारा जमीनी स्तर पर किए जाने वाले कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि छात्रों को तेजी से बदलती दुनिया को समझने में सक्षम होने के लिए नए दृष्टिकोण विकसित करने की आवश्यकता है।

भारत में आधुनिक शिक्षा प्रणाली अंग्रेजों द्वारा स्थापित की गई है, जिसे मुख्य रूप से 1830 के दशक में लॉर्ड थॉमस बैबिंगटन मैकाले द्वारा और बाद में 1854 में वुड के भारतीय शिक्षा के मैग्ना कार्टा द्वारा पेश किया गया था। अध्यापन कक्षाओं तक ही सीमित था और प्रकृति के साथ संबंध टूट गया था, और छात्र और शिक्षक के बीच घनिष्ठ संबंध भी खो गया था। आधुनिक शिक्षा पाठ्यपुस्तकों और परीक्षाओं की पश्चिमी प्रणाली पर आधारित है। भारत में पाठ्यपुस्तकों की संस्कृति को शुरू करने के मुख्य रूप से

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

दो उद्देश्य हैं–क) नए ज्ञान का उत्पादन बंद करना और छात्रों को यह सोचने पर मजबूर करना कि वे केवल उस ज्ञान के उपभोक्ता हैं जिसे पाठ्यपुस्तक लेखक व्यक्त करना चाहते हैं, ख) ज्ञान पर शिक्षक के अधिकार को कम करना। शिक्षकों ने यह तय करने का अधिकार खो दिया कि क्या पढ़ाया जाए और कैसे पढ़ाया जाए। वे पाठ्यपुस्तकों में दिए गए मामले का भी पालन करते हैं। परीक्षा को हमारी शिक्षा प्रणाली में पेश किया गया था ताकि छात्र केवल उन चीजों को ही सीख सकें जिन्हें परीक्षा में शामिल किया जाना चाहिए, न कि पूरी चीजों को। यह अभ्यास अंततः ज्ञान के क्षेत्र को संकुचित कर देता है। परीक्षा पास करने के लिए, छात्र केवल परीक्षा पास करने के लिए, बिना समझे सामग्री को याद करते हैं। प्राचीन भारत में शिक्षा उस समय दुनिया के बाकी हिस्सों से काफी अलग थी। समाज और राज्य पाठ्यक्रम या प्रशासन में हस्तक्षेप नहीं कर सकते थे। शिक्षा प्राप्त करने के लिए, एक बच्चे को अपनी पढ़ाई की पूरी अवधि के लिए घर छोड़कर गुरुकुल में एक शिक्षक के साथ रहना पड़ता था।

सामाजिक आवश्यकताएँ– प्राचीन भारतीय शिक्षा मुख्य रूप से व्यक्तियों और समाज की आवश्यकताओं पर आधारित थी। निर्देश, प्रशिक्षण और प्रेरणा को शिक्षा का एक अभिन्न अंग माना जाता है। सामाजिक कर्तव्यों की मान्यता ने राजनीतिक और सैन्य विज्ञान, कानूनों, चिकित्सा और पाठ्यक्रम विषयों की व्यावसायिक तैयारी को स्वीकार किया। यह एक कारण है कि फूलना स्वाभाविक था। इसका एक निश्चित आदर्श और एक निश्चित लक्ष्य था। प्राचीन भारत में शैक्षिक केंद्र, उन क्षेत्रों में स्थित थे, जो भारतीय सभ्यता और संस्कृति की वनस्पतियों और जीवों और फव्वारों के बीच प्रकृति की सुंदरता से अलंकृत थे। प्राचीन विद्यालयों में वातावरण एकांत और शांति का था। शिक्षा का प्रमुख साधन मानसिक एकाग्रता थी। प्राचीन भारत में शिक्षकों ने शिक्षा का एक विशेष रूप विकसित किया, जिसके द्वारा आध्यात्मिकता और भौतिकवाद के बीच समन्वय स्थापित किया गया और इस प्रकार मानव जीवन को काफी हद तक सटीकता और धार्मिकता प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ाया गया।

निष्कर्ष– प्राचीन काल में शिक्षा, जो पहले विकसित हुई थी, वह वैदिक काल था, फिर मौर्य काल, फिर गुप्त काल और फिर गुप्त काल के बाद आया। प्राचीन भारत में शिक्षा प्रणाली वेदों पर आधारित थी, इसलिए इसे वैदिक शिक्षा प्रणाली का नाम दिया गया। चार वेद हैं–ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। जीवन से संबंधित ज्ञान, शिक्षक और छात्र के बीच घनिष्ठ संबंध पर केंद्रित बुनियादी बातों ने विकास, सामाजिक कार्य का विकास, व्यावसायिक प्रशिक्षण, व्यक्तित्व का विकास, औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा को जिम्मेदार बनाना, अनुशासन पर ध्यान केंद्रित करना, मुफ्त शिक्षा प्रदान करना, स्कूल के घंटों को समायोजित करना, समान और प्रभावी संचार और सामाजिक आवश्यकताओं को जन्म दिया। प्राचीन भारत में शिक्षा किसी भी बाहरी संगठन या एजेंसी के नियंत्रण से मुक्त थी। गुरुकुल और आश्रम स्वायत्तता से काम करते थे और उनके अपने नियम और नीतियां थीं। प्राचीन शिक्षा प्रणाली ने न केवल भारत में, बल्कि दुनिया के अन्य देशों में भी शिक्षा की अन्य प्रणालियों को प्रभावित किया है। इस शिक्षा प्रणाली की मुख्य विशेषताएं थीं, शिक्षक और छात्र एक–दूसरे के साथ समन्वय में काम करते थे। शिक्षक छात्रों को अपने बच्चों के रूप में मानते थे और छात्र अपने शिक्षकों का सम्मान करते थे और उनके आदेशों का पालन करते थे। छात्र, शैक्षणिक शिक्षा के अलावा घर के कामों के प्रदर्शन में लगे हुए थे और इस तरह, उन्होंने घरेलू जिम्मेदारियों के संबंध में अपने कौशल और क्षमताओं का विकास किया। प्राचीन शिक्षा प्रणाली का मुख्य ध्यान धार्मिक शिक्षा पर था। अकादमिक शिक्षा के अलावा, छात्रों को संस्कृतियों, मानदंडों, नैतिकता, मूल्यों और नैतिकता के संदर्भ में ज्ञान और जानकारी प्रदान की गई, ताकि वे समाज के जिम्मेदार सदस्य बन सकें और समुदाय के कल्याण को बढ़ावा देने की दिशा में प्रभावी ढंग से काम कर सकें। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत वेद, पुराण, उपनिषद, महाकाव्य, स्मृतियों में वर्णित ज्ञान अत्यंत उपयोगी है एवं आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में हम वहां की व्यवहारिक शिक्षा एवं ज्ञान को अपनाकर भारतीय शिाक्षा पद्धति को एक नई दशा और दिशा दे सकते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ए.एस.अलतेकर, प्राचीन भारत में शिक्षा, नालंदा प्रकाशन, दिल्ली, जनवरी, 2010.
2. आर0 एन0 शर्मा एवं आर0 के0 शर्मा, भारत में शिक्षा का इतिहास, अटलांटिक पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, जनवरी, 2023.
3. राम शरण शर्मा, भारत का प्राचीन इतिहास, विजन पब्लिकेशन संस्करण, 2020.
4. प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणालीः प्राचीन भारतीय शिक्षा का अवलोकन राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1968.
5. श्री पाद दामोदर सातवलेकर : त्रग्वेद का सुबोध भाष्य, स्वाध्याय मण्डल पारिणी, पारिणी गुजरात, 1972.
6. सिद्धेश्वर भट्टाचार्य : यर्जुवेदे संहिता, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, 1973.
7. श्रीकान्त शास्त्री : अथर्ववेद संहिता, माधव पुस्तकालय, कमला नगर, दिल्ली, 2000.
8. डॉ0 भाष्कर मिश्र, वैदिक शिक्षा मीमांषा, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली, 1991.
9. चंद्रधर शर्मा , भारतीय दर्शन, मोतीदास बनारसी दास पब्लिशर्स, बनारस, 2022.
10. डॉ0 धीरेंद्र झा, वैदिक कालीन शिक्षा पद्वति एवं अनुशीलन, कला प्रकाशन, वाराणसी, 2019.
11. डॉ0 दामोदर महतो, पाणिनीय शिक्षा, मोतीदास बनारसी दास पब्लिशर्स, बनारस, 2017.
12. सबल सिंह, महाभारत, तेज कुमार बुक डिपो, लखनऊ, 2015.
13. पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य, यजुर्वेद संहिता, श्री वेद माता गायत्री ट्रस्ट, शांतिकुंज, हरिद्वार, 2024.
14. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर : सामवेद संहिता, स्वाधाय मंडल पारिडी, गुजरात।
15. दयानंद सरस्वती, सामवेद संहिता, वैदिक पुस्तकालय, अजमेर, 2020.
16. डॉ0 भवानी लाल भारतीय, अथर्ववेद अध्यात्म शतक, विजय कुमार गोविन्द राम हासानन्द, आर्य साहित्य भवन, गोहा, 2000.
17. पं0 ईश्वर चन्द्र, त्रग्वेद संहिता परिमल पब्लिकेशन, दिल्ली, 2019.
18. श्रीनिवास शास्त्री बाल्मीकि मुनि प्रणीत रामायणम, परिमल पब्लिकेशन, दिल्ली, 2024.

*****